ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /13

ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 यतीन्द्र मिश्रा
सह–आचार्य एवं शोध निर्देशक
डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सारांश :

''ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा का एक स्वरूप है जिसे इंटरनेट का उपयोग करके वितरित और प्रशासित किया जाता है। यह दृष्टिकोण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शिक्षण संस्थानों में अंतःक्रिया और सीखने की प्रक्रिया को सुगम और लचीला बनाता है। ऑनलाइन शिक्षा के हमारे जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनेक प्रभाव पड़े हैं। प्रस्तुत प्रपत्र में मुख्य रूप से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा व्यवस्था पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा के स्तर का आंकलन किया जा सके।''

प्रस्तावना :

ऑनलाइन शिक्षा कम्प्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप जैसे– इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग करते हुए ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। ऑनलाइन शिक्षा विभिन्न इलैक्ट्रॉनिक मीड़िया जैसे– इंटरनेट मीड़िया, ऑड़ियों–वीड़ियों, टेली कॉन्क्रेमिंग, फायवर ऑप्टिक्स, वीड़ियों टेस्ट, मल्टीमीड़िया और हायपर मीड़िया, ई–बुक्स, ऑनलाइन डेटाबेस, ऑनलाइन चैट आदि के माध्यम से शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण एवं विकास प्रदान करने का एक रास्ता है।

मानव के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके अभाव में व्यक्ति के व्यक्तित्व का उचित विकास सम्भव नहीं है। भारत एक विकासशील देश है जहाँ की 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत है। ऐसे में भारत की शिक्षा व्यवस्था को सार्थक बनाना है तो ऐसे क्षेत्रों पर ध्यान देना होगा। आज भारत में शिक्षा पर अत्यधिक जोर देते हुए इसे डिजिटल बनाने और सभी को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने पर ध्यान दिया जा रहा है। ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा का कदम महत्वपूर्ण साबित हो रहा है।

21वीं सदी के प्रारम्भ में सूचना, संचार एवं तकनीकि क्रान्ति ने परम्परागत शिक्षण के स्थान पर नवीन शिक्षण प्रणाली के लिए परिवेश निर्मित किया है। संचार उपग्रहों के प्रक्षेपण के साथ ही शिक्षण संस्थानों में नवीन परिवर्तन आया। शिक्षा को तकनीकि से जोड़ा गया। आज स्कूलों में शिक्षा इलैक्ट्रॉनिक साधनों से संचालित की जा रही है, साधारण से ब्लैक बोर्ड और खड़िया का स्थान, स्मार्ट बोर्ड और पेन–पेन्सिल एवं लेजर प्वांइटर ने लिया है।

आधुनिक समय में ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के बीच अधिक लोकप्रिय हो रही है। छात्र ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को समझकर बड़ी संख्या में इससे जुड़ रहे हैं। 2019 में (रिसर्च एंड मार्केट्स) ने अनुमान लगाया कि 2025 तक ऑनलाइन शिक्षा बाजार 230 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा। आज हम जिस महामारी के दौर से गुजर कर आगे आये हैं। उसने स्पष्ट कर दिया कि ऑनलाइन शिक्षा ने किस प्रकार शिक्षा व्यवस्था को बनाए रखा।

समस्या का कथन :

आधुनिक भारतीय समाज में बढ़ती ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था से भारतीय ग्रामीण परिवेश में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया। जिसके ग्रामीण क्षेत्रों पर अनेक प्रभाव पड़े। **''ग्रामीण क्षेत्रों पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव''** एक ऐसा ही विषय है, जिस पर अध्ययन किए जाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

अध्ययन प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता द्वारा द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया जाएगा, जिसके सम्बन्धित विषय के पूर्व अध्ययनों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं, भारत सरकार द्वारा जारी रिपोर्टो आदि का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव :

सूचना प्रौद्योगिकी की सर्वव्यापकता ने हमारे जीवन के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित किया है, जिसमें शिक्षा अहम् पक्ष है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के कारण आज ऐसे ग्रामीण क्षेत्र जहां से शहर जाना या शहरी शिक्षा से जुड़ना आसान नहीं था। आज वह विभिन्न डिजिटल माध्यमों से शहरों के किसी भी शिक्षण संस्थान से जुड़ना अपने पसंद के विद्वानों को सम्प्रेषण कर अपनी शिक्षण समस्याओं को आसानी से हल कर पा रहे हैं। और देश की शिक्षा व्यवस्था की मुख्य धारा से जुड़कर 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य को साकार कर रहे हैं।

कोविड–19 के दौरान, ग्रामीण बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए कई सकारात्मक पहले की गई है। इस दिशा में 'पीएम ई विद्या' की शुरूआत एक महत्वपूर्ण पहल शाबित हुई। इसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए डिजिटल/ऑनलाइन शिक्षा के बहुआयामी अवसर प्राप्त होता है। ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थी वेब कॉफ्रेसिंग के द्वारा विषयवस्तु एवं प्रकरण पर किसी भी विषय के विशेषज्ञ के परस्पर अंतःक्रिया करते हुए अधिगम कर सकते है, जिससे उनके पूर्व ज्ञान में वृद्धि होती है।

आर्थिक समीक्षा 2020–21 में भी व्यापक स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने की बात की गई। 'अक्टूबर–2020 चरण–1 (ग्रामीण) के उल्लेख में बताया गया कि ग्रामीण भारत में सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में नामांकित विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन की संख्या में भारी वृद्धि दर्ज की गई। जहाँ 2018 में 36.5% विद्यार्थियों के पास ही स्मार्टफोन के वहीं 2020 में 61.08% विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन मौजूद पाए गये। जो ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव को दिखाता है। साथ ही ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के कारण इन क्षेत्रों में सरकारी स्कूलों में नामांकन पर में भी वृद्धि हुई है।

सुझाव :

किसी भी देश का भविष्य वहां की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर होता है। आज भी जब हम ग्रामीण भारत में शिक्षा की बात करते हैं तो यह काफी पिछड़ी हुई दिखाई देती है। वही ऑनलाइन शिक्षा के प्रयास की बात करे तो इसमें कई सकारात्मक प्रभाव देखे गये है, फिर भी स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। अगस्त 2021 में ग्रामीण क्षेत्रों के केवल 8 प्रतिशत बच्चे ही ऐसे पाए गए जो नियमित तौर पर अध्ययन कर रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्र एक बड़ा भाग शिक्षा से वंचित है। जिन्हें शिक्षा की मुख्य धारा में लाना आवश्यक है। इसमें लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. **वित्तीय सहायता में वृद्धि करना–** ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्कूलों में काफी बजट की आवश्यकता होती है, जिसके अभाव में इन स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था में रूकावट आती है।

अतः सरकार द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के लिए बजट में अधिक धन आवंटित करने के बारे में गम्भीरता से सोचा जाए।

2. **अभिभावकों और शिक्षकों का प्रशिक्षण–** किसी भी शिक्षा व्यवस्था के सुचारू रूप से चलने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षित होना अतिआवश्यक है, क्योंकि उचित प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षण साथ ही अभिभावक बच्चे के विकास को नकारात्मक प्रभावित कर सकते हैं।
3. **इंटरनेट तक पहुँच में वृद्धि करना–** ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता इसके तकनीकि माध्यमों पर निर्भर करती है। देखा जाए तो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में कई स्थान ऐसे हैं जहाँ पर इंटरनेट की पहुँच ही नहीं है और है भी तो न के बराबर। अतः ऐसे में सबसे पहले तो इन क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुँच में वृद्धि की जाए।
4. **मानक नीति का तैयार किया जाना–** ऑनलाइन शिक्षा की दिशा में मानक नीति के अभाव में हमें अनेक तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अतः सर्वप्रथम सरकार द्वारा एक मानक नीति तैयार की जाए जिसके अनुसार शिक्षा व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके।
5. **उचित अध्ययन स्थानों का उपलब्ध कराया जाना–** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी कई स्थानों पर स्कूलों में पर्याप्त अवसंरचना उपलब्ध नहीं है न ही ऐसे स्थान है जहाँ बैठकर छात्र पढ़ाई कर सके। अतः ऐसे क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा का प्रयास असफल ही है। इसलिए सर्वप्रथम सरकार द्वारा ऐसे क्षेत्रों में अध्ययन हेतु उचित अवसंरचना उपलब्ध करायी जाए।

निष्कर्ष :

किसी भी देश या समाज का विकास वहां की ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा एवं सूचना की समान पहुँच पर निर्भर करता है। हालांकि सरकार द्वारा इस दिशा में पर्याप्त प्रयास भी किया जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा इस दिशा में अच्छा काम कर रही है। जिससे पिछड़े समुदायों को सहायता मिल सके। डिजिटल इंडिया का लोकार्पण भी इस दिशा में स्वागत योग्य कदम है। जोकि सरकार तकनीकि उद्योग और समाज का एकीकृत फ्रेमवर्क है। ऑनलाइन शिक्षा के ग्रामीण क्षेत्र में हस्तक्षेप से निश्चित रूप से सतत् वृद्धि की ओर मार्ग प्रशस्त होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Pande Miss Deepali, Dr. Wadhui V.M., Dr. Thakre V.M. (2016), Current trends of E-Learning in India, International Journal of Engineering and Technology (IRJET Volume : 03, Issue : 01.
- Ms. Yadav Swati, Dr. Tiwari Anshuja, E-Learning in Rural India.
- Anand Rimmi, Saxena Sharad, Saxena Shilpi (2012), J.J. Modern Education and Computer Science. S. 46-52.
- http://www.tandfonline.com>Full
- https://www.scotbuzz.org>2021/06
- https://www.thehindu.com.deli
- https://www.linkedin.com.Learning
- https://doi.org/10.1080/1097198x.2018.1542262